❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्।
सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचरणों से अवश्य दूर करें।

O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 40, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 नवम्बर, 2016 से रविवार 27 नवम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन सम्पन्न

श्री बनवारी लाल पुरोहित, महामहिम राज्यपाल असम एवं नागालैंड के महामहिम राज्यपाल श्री पी. बी. आचार्य यज्ञ में हुए सम्मिलित

महाशय धर्मपाल MDH दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, धनश्री का हुआ उद्घाटन

आर्यसमाज के शिक्षा प्रसार कार्य में हर सम्भव सहयोग करेंगे – टी.आर. जेलिआंग, मुख्यमन्त्री नागालैंड

प्रचार कार्यों में 100 वर्ष पूर्व यह गति होती तो आज पूर्वोत्तर कुछ और होता – प्रकाश आर्य

तीन दिन – तीन स्थानों पर हुआ सम्मेलन : 10 हजार की भारी उपस्थिति ने सम्मेलन को बनाया ऐतिहासिक

जंगल में हुआ मंगल : स्वप्न में भी नहीं सोचा ऐसा होगा महासम्मेलन
(पढ़िए विशेष लेख अगले अंक में)

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में

स्थानीय लोगों की अभूतपूर्व उपस्थिति – अभी शेष हैं वैदिक धर्म की जड़ें – पुनः सींचने की आवश्यकता

वेद-स्वाध्याय

यज्ञ कर्म करो

ये भक्षयन्तो न वसून्यानृधुर्यानग्नयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः।
या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा।। -अथर्व. 2/35/1
ऋषिः **अङ्गिराः**।। देवताः **विश्वकर्मा**।। छन्दः **बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ-मनुष्य-समाज में **ये**=जो लोग **भक्षयन्तः**=निरन्तर भोग करते हुए भी **वसूनि न आनृधुः**=उन भोग्य-ऐश्वर्यों को बढ़ाते नहीं हैं अतएव **यान्**=जिन लोगों को **धिष्ण्याः अग्नयः**=(परमात्मा द्वारा) जगत् में स्थापित प्राणादि अग्नियाँ **अनु अतप्यन्त**=भोग के अनन्तर सन्ताप देती हैं, जलाती हैं **तेषाम्**=उन लोगों की **या अवया दुरिष्टिः**=जो नीचे गिरानेवाली यह दुष्प्रवृत्ति या दुष्ट-यजन है **ताम्**=उसे **नः**=हमारे लिए **विश्वकर्त्ता**=विश्वकर्त्ता परमेश्वर **स्विष्टिम्**=सुप्रवृत्ति या ठीक यजन के रूप में **कृणवत्**=कर दें।

विनय-इस संसार में भोगों को भोगने के साथ ही हम मनुष्यों का यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि हम भोग से क्षीण हो जानेवाले ऐश्वर्य को अपने उत्पादक कर्म द्वारा संसार में सदा बढ़ाते भी जाएँ। प्रत्येक अन्न खानेवाले का कर्त्तव्य है कि वह अन्न को उत्पन्न करने में कुछ-न-कुछ सहायता भी दे। यही यज्ञ-कर्म है। जो लोग यह यज्ञ-कर्म नहीं करते उन्हें परमात्मा की अग्नियाँ जलाने लगती हैं; उन्हें दुःख से सन्तप्त होना पड़ता है। परमात्मा की जगत् में स्थापित वे अग्नियाँ जो हम मनुष्यों के लिए भोग-ऐश्वर्यों को उत्पन्न कर रही हैं, उन्हें यदि हम भोग भोगने के बाद अपने यज्ञ-कर्म द्वारा अगले भोगों के उत्पन्न करने के लिए सहायता न देंगे-उस दिशा में उद्दीप्त न करेगे, तो वे अग्नियाँ हमें सन्तप्त करने लगेंगी। यही संसार में दुःखों के अस्तित्व का रहस्य है। भोग के साथ यज्ञ जुड़ा हुआ है। मनुष्य-समाज इसी प्रकार चल रहा है। मनुष्य परस्पर मिलकर अपने परिश्रमों से भोग्य वस्तुओं को बढ़ा रहे हैं, परन्तु मनुष्य-समाज में जो मनुष्य स्वार्थी होकर भोग का सुख लेना चाहते हैं, पर यज्ञ-कर्म (परिश्रम) नहीं करना चाहते, उनकी उस 'दुरिष्टि' द्वारा हमारे मनुष्य-समाजरूपी यज्ञ में भङ्ग होता है। उनकी इस दुष्प्रवृत्ति से उनका पतन होता है, उनका आत्मतेज दबता जाता है। इस उलटे चक्र को चलाने का यत्न करने के कारण उनको संसार का ताप, दुःख भी मिलता है, परन्तु उनकी इस वैयक्तिक हानि से हमारे मनुष्य-समाज की भी क्षति होती है, मनुष्य-समाज को उनका बोझ सहना पड़ता है। उनको कष्ट व अनुताप इसीलिए होता है, इसीलिए मिलता है कि वे यह समझ जाएँ कि उन्हें मनुष्य-समाजरूपी यज्ञ का भङ्ग नहीं करना चाहिए। उन्हें केवल भोग भोगने की अपनी 'दुरिष्टि' को बदलकर यज्ञ-कर्म करने की 'स्विष्टि' में ले- जाना चाहिए। अहा! सब मनुष्य-समाज के व्यक्ति इस सत्य को समझें और सभी स्वेच्छा से यज्ञ-कर्म द्वारा जगत् के ऐश्वर्य को बढ़ाने में सहायक हों तो कैसा सुख हो! किसी को अनुतप्त न होना पड़े, समाज की उन्नति होती जाए।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

नोटबंदी और विपक्ष की गुटबंदी

8/11 अचानक नोटबंदी से कई सारे मामले खुलकर सामने आये। जहाँ भ्रष्टाचार से लड़ने वाली ताकतें जिन्होंने 2012 में देश हिला दिया था वो इसके विरोध में खड़ी हो गयीं तो वहीं सारे काले इल्म के माहिर बाबा, दुनिया की परेशानियों का इलाज चुटकी में करने वाले रूहानी फकीर, हाथ देखकर भविष्य बताने वाले ज्योतिषी सब के सब इस समय बैंकों के बाहर लाइन में खड़े नजर आ रहे हैं। कुछ अर्थशास्त्री इसे देश के लिए अच्छा और बेहतर कदम बता रहे हैं तो कुछ इसके लाभ और हानि दोनों मिश्रित कर देख रहे हैं। सब्जीमंडी से लेकर संसद तक देश का विपक्ष मुखर है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने नोटबंदी के खिलाफ विपक्ष को एक हो जाने को कहा है। हालाँकि हमारा उद्देश्य सत्तापक्ष की प्रसंशा या विपक्ष की आलोचना का नहीं है। हाँ यदि किसी को आपत्ति है तो सकारात्मक, निष्पक्ष राजनीति को अलग रखकर एक स्वच्छ बहस होनी चाहिए न कि इससे जनता में अफवाह फैलाकर अपने राजनैतिक हित तलाश किये जायें। क्योंकि नोटबंदी देश और समाज से जुड़ी एक सरकारी नीति है, न कि कोई राजनीति, जिसका मूल्याकन जरूरी है। सब जानते हैं हमारे देश में भ्रष्टाचार अपने उच्च शिखर पर है एक निचले स्तर से लेकर ऊपर तक बिना रिश्वत् के लेनदेन नहीं होता। भ्रष्टाचार से उत्पन्न धन को अर्थशास्त्री कालाधन कहते हैं क्योंकि वह धन आम आदमी से लेकर सरकार तक की पहुंच से बाहर होता है।

बीबीसी को दिए अपने एक साक्षात्कार में दिल्ली के मुख्यमंत्री द्वारा एक के बाद एक कई आरोप केंद्र सरकार पर जड़े गये इस बीच वो कई बार बीबीसी संवादाता नितिन श्रीवास्तव पर भड़कते हुए भी नजर आयेै खैर फिलहाल देश का एक बड़ा धड़ा अब इन आरोपों को गंभीरता से नहीं लेता। अब सवाल यह है कि क्या इससे काले धन की अर्थव्यवस्था नियंत्रित होगी? जाने-माने अर्थशास्त्री नितिन देसाई जिनका लेख दैनिक जागरण के सम्पादकीय में लिखते हैं कि साल 2015-16 में भारत की राष्ट्रीय आय 134 लाख करोड़ रुपये थी और इसमें 500 और 1000 रुपये के नोटों का हिस्सा करीब 10 प्रतिशत है। 31 दिसंबर तक हम नहीं जान पाएंगे कि इसमें से कितने नोट वैध तरीके से कमाए गए हैं और कितने अवैध तरीके से। लेकिन कहा जा रहा है कि इसका करीब 20 प्रतिशत हिस्सा प्रथम चार दिनों में बैंकों में जमा करा दिया गया है। देश में काले धन का अधिकांश हिस्सा या तो रियल इस्टेट या सर्राफा बाजार या विदेशी बैंकों में जमा के रूप में है। जब तक हम जड़ पर प्रहार नहीं करेंगे तब तक काले धन की अर्थव्यवस्था से पीछा नहीं छुड़ा सकेंगे और इसकी जड़ कर चोरी, राजनीतिक उगाही और भ्रष्टाचार में निहित है।

नोट बंदी का व्यापक असर इस वक्त बैंकों और एटीएम के बाहर लगी लाइन के तहत नकारात्मक अंदाज में देखा और प्रचारित किया जा रहा है। मगर केंद्र सरकार ने 500 और 1000 रुपए के नोट पर जिस तरह से पाबंदी लगाकर भ्रष्टाचार के दम पर जमा किए गए अकूत कालेधन को तबाह किया है वह काफी सराहनीय है। इस फैसले का व्यापक असर आने वाले दिनों में अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भी देखने को मिलेगा। इससे भारतीय मुद्रा का विदेशों में प्रभुत्व और बढ़ जाएगा। हालांकि, इस फैसले को लेकर लोगों में तमाम तरह के सवाल उठ रहे हैं। फिर भी सभी को इसे स्वीकार करने की जरूरत है कि इस निर्णय का बड़े पैमाने पर सकारात्मक व नकारात्मक असर आने वाले दिनों में देखने को मिलेगा। हालाँकि, इस कदम से देश के असंगठित क्षेत्रों को कुछ समय के बाद मजबूती मिलेगी। दूसरा इसका सबसे बड़ा पहलू यह है कि अतिवादी, आतंकवादी, नक्सली व अन्य राष्ट्रद्रोही शक्तियों के पास जमा भारतीय मुद्रा जिसका उपयोग वे लोग देश में हिंसा, अलगाव, और दहशत फैलाने में करते थे कहीं न कहीं उन पर भी यह नोट की चोट पड़ी है। एक बड़ी बात यह भी है कि रुपये का कागज तैयार करने के लिए दुनिया में 4 फर्म हैं। फ्रांस की अर्जो विगिज, अमेरिका का पोर्टल, स्वीडन का गेन और पेपर फैब्रिक्स ल्युसेंटल इनमें से दो फार्मों का 2010-11 में पाकिस्तान के साथ भी रुपए के कागज का अनुबंध हो चुका है जिसका भारत ने विरोध भी किया था, अर्थात् नोट छापने के लिए जो कागज भारत लेता था वही कागज 2010 से पाकिस्तान भी ले रहा है, फलस्वरूप पाकिस्तान उस कागज के अधिकतम हिस्से का इस्तेमाल भारतीय रुपए (नकली नोट) छाप कर भारत में भेजने का काम कर रहा है। इसीलिए वर्तमान सरकार ने आनन-फानन में अब जर्मनी के एक प्रिंटिंग प्रेस से कागज लेने का अनुबंध किया। साथ ही ये भी अनुबंध किए कि ये कागज जर्मनी किसी अन्य को नहीं दे सकता, ताकि भविष्य में फिर कभी नकली नोट की समस्या भारत में न हो सके। ये कागज पहले वाले से बहुत हल्का और अधिक सुरक्षित है, ये पानी, धूप से खराब नहीं हो सकता। लेकिन जब देश की अर्थव्यवस्था को कुछ फायदा होता दिखाई दे रहा है तो संसद से लेकर सड़क तक नोटबंदी पर सियासी संग्राम शुरू हो गया है। कुछ लोग परेशानी होने के बाद भी सरकार के पक्ष में बोलकर इसे राष्ट्र यज्ञ बता रहे हैं तो वहीं कुछ लोग इसे तानाशाही व अच्छा फैसला नहीं बता रहे हैं इस सबके बाद संसद से सड़क तक विपक्ष के चौतरफा हमले से सरकार के इरादों पर तो कोई असर पड़ता दिख नहीं रहा है लेकिन पिछले एक हफ्ते से नोटबंदी से जिस तरह लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है उससे ये सवाल जरूर उठ रहा है कि क्या इससे मोदी सरकार पर राजनीतिक असर पड़ सकता है? या एक बार फिर विपक्ष मुंह की खायेगा?

-सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

विश्व की बदलती राजनीति

ट्रंप की जीत के बाद पूरे विश्व की राजनीति में एक अजीब परिवर्तन दिखाई दे रहा है। कभी जिन मुद्दों पर सरकारें बदनाम होती थीं या गिर जाती थीं आज उन्हीं मुद्दों पर पूर्ण बहुमत से सरकारें बन रही हैं यानि कि झूठी धर्मनिपेक्षता, समाजवाद के गीत, खुद को उदारवादी और परम सहिष्णु कहने वाले नेताओं को लोग नकारते से नजर आ रहे हैं। चाहें वह भारत का चुनाव हो या अमेरिका जैसे समृद्ध देश का। डोनाल्ड ट्रंप पर जो आरोप लगे उनमें से अधिकांश ऐसे थे जिनकी सत्यता के बारे में शायद ही किसी को कोई संदेह हो। उन पर मुस्लिम विरोधी होने का आरोप लगा। ठीक यही आरोप भारत में मोदी पर भी अक्सर लगाये जाते रहे हैं। खैर इस चर्चा पर तो यहां जगह कम पड़ जाएगी लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति बनने जा रहे डोनाल्ड ट्रंप को बेवजह की चर्चा में बनाए रखने वाले मुद्दों का अंत नहीं होगा। दरअसल, ट्रंप की कामयाबी और इसमें पारम्परिक मुद्दों का गौण हो जाना सिर्फ अमेरिका में ही नहीं दिख रहा है। बल्कि दुनिया में पिछले कुछ सालों में कई ऐसे मौके आए हैं जिनसे ऐसे संकेत मिले हैं कि आम लोगों के लिए सियासत के मुद्दे बदल रहे हैं। ट्रम्प ने वही बात की जो अमेरिकी जनता सुनना चाह रही थी। सही अर्थो में कहा जाये तो मुस्लिम देशों से बाहर जिस प्रत्याशी या पार्टी का मुसलमान खुलकर विरोध करता है वही सत्ता का स्वाद चखता है।

भारत का ही उदाहरण लें तो नरेंद्र मोदी को लेकर जमकर नकारात्मक बातें की गई थीं। गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर उनके कार्यकाल में दंगा हुआ था। इसलिए उन्हें दंगाई, खून का सौदागर, मुस्लिम विरोधी और पता नहीं क्या-क्या कहा गया। उन पर यह आरोप भी लगाया गया कि वे तानाशाह हैं। अंदेशा जाहिर किया गया कि यदि वे प्रधानमंत्री बने तो कयामत आ जाएगी। लेकिन बदले में नरेंद्र मोदी पूर्ण से भी अधिक बहुमत से देश के प्रधानमंत्री बने। दबी जुबान में ही सही मीडिया के एक हिस्से में उनके चरित्र पर भी सवाल उठे। लेकिन आम मतदाताओं ने इनमें से किसी भी बात पर यकीन नहीं किया और उन्हें ऐसा जनादेश दिया जैसा पिछले 30 साल में किसी को नहीं दिया था। इससे मतलब साफ है कि जिन बातों को राजनीतिक वर्ग और मीडिया मुद्दा बना रहे होते हैं, वे आम लोगों के लिए प्रासंगिक रह ही नहीं गये हैं।

> ***........इस्लाम और मुसलमान दो ऐसी चीज हो गयी जो एक के बारे में कुछ कहना दूसरे का अपमान समझा जाने लगा है। जबकि जो लोग इस्लाम को झूठे-सच्चे श्रद्धा-सुमन चढ़ाते रहते हैं, जैसे जॉर्ज बुश, टोनी ब्लेयर, ओबामा या याहया खान, अलकायदा, हिजबुल मुजाहिद्दीन, लश्करे तोयबा, आई. एस. आई. एस. आदि इन्हीं लोगों ने लाखों मुसलमानों को मारा है। सीधा आदेश देकर, स्वयं भाग लेकर या दोनों तरीकों से। पाकिस्तान, ईरान, सीरिया, अफगानिस्तान, ईराक, यमन, बहरीन, आदि देशों में मुसलमान किसके हाथों मारे जा रहे हैं? इस तथ्य को नोट करना चाहिए, और वैचारिक संघर्ष का आह्वान करने वालों की नेकनीयती समझनी करनी चाहिए। ....***

जिस जेहादी विचारधारा को भारत ने 800 साल झेला वह आज यूरोप और अमेरिका आदि गैर मुस्लिम देशों में अपनी जड़ें जमा रही है या ये कहो एक पुरानी ऐतिहासिक विचारधारा आधुनिक विज्ञान के सामने खड़ी है। ऐसे में यह कहना कोई गुनाह नहीं होगा कि विश्व की उदार मीडिया और सेकुलरवाद जिस इस्लाम को एक शांति और सहिष्णुता का मार्ग बताकर वोट बटोर रहा था उसे पिछले कुछ सालों से पूरे विश्व का युवा एक बड़े खतरे के रूप में भी देख रहा है। चेचन्या के कट्टरवादी गुटों के विरोध के बाद रूस के राष्ट्रपति चुनावों में व्लादिमीर पुतिन पूर्ण बहुमत पाकर जीते थे। ठीक यही कुछ भारत और उसके बाद अमेरिका में देखने को मिला।

यूरोपीय संघ से ब्रिटेन के बाहर निकलने के मुद्दे पर जनमत सर्वेक्षण का जो परिणाम आया, उसमें भी यह संकेत था कि आम लोग और राजनीतिक लोगों की सोच में काफी फासला खड़ा हो गया है जिसमें मीडिया भी शामिल है, बहुत कम लोगों को उम्मीद थी कि ब्रिटेन के लोग यूरोपीय संघ से बाहर निकलने के पक्ष में राय देंगे। लेकिन नतीजों ने सारे अनुमानों को धता बता दिया। मतलब कि जनता क्या सोच रही है और नेता उसे क्या देना चाह रहे हैं इसमें काफी कुछ दूरी देखने को मिली। आज दुनिया के अलग-अलग हिस्से की इन अलग-अलग घटनाओं को आपस में जोड़ने पर एक चीज जो सामने निकलकर आई है कि पूरी दुनिया में आम लोगों के मुद्दे बदल रहे हैं। पारंपरिक मुद्दे अपनी प्रासंगिकता खो रहे हैं लेकिन एक बड़ा राजनीतिक वर्ग अब भी उन्हीं पारम्परिक मुद्दों पर अटका हुआ है और नए मुद्दों की पहचान कर पाने में सक्षम नहीं दिख रहा है।

कट्टरपंथी इस्लामिक आतंकवाद से विश्व भयभीत है। अमेरिका भी 9/11 की त्रासदी झेल चुका है। ट्रम्प ने कोई बड़ा तीर नहीं चलाया बस मुस्लिम के खिलाफ ब्यान दिए उसने मुस्लिमों के अमेरिका में प्रवेश को प्रतिबंधित करने और प्रवासी मुस्लिमों पर नजर रखने की बात कही थी। इस कारण मुसलमान नाराज हो गये थे। किसी विचारधारा के विरुद्ध कुछ कहना उस विचारधारा के अनुयायियों के विरुद्ध बोलने में कोई अंतर नहीं रह गया है। इस्लाम और मुसलमान दो ऐसी चीज हो गयी जो एक के बारे में कुछ कहना दूसरे का अपमान समझा जाने लगा है। जबकि जो लोग इस्लाम को झूठे-सच्चे श्रद्धा-सुमन चढ़ाते रहते हैं, जैसे जॉर्ज बुश, टोनी ब्लेयर, ओबामा या याहया खान, अलकायदा, हिजबुल मुजाहिद्दीन, लश्करे तोयबा, आई. एस. आई. एस. आदि इन्हीं लोगों ने लाखों मुसलमानों को मारा है। सीधा आदेश देकर, स्वयं भाग लेकर या दोनों तरीकों से। पाकिस्तान, ईरान, सीरिया, अफगानिस्तान, ईराक, यमन, बहरीन, आदि देशों में मुसलमान किसके हाथों मारे जा रहे हैं? इस तथ्य को नोट करना चाहिए, और वैचारिक संघर्ष का आह्वान करने वालों की नेकनीयती समझनी करनी चाहिए। मीडिया और सोशल मीडिया के कारण दुनिया सिमट गई है और मनुष्य का आपस में संपर्क और हाल बहुत आसान हो गया है इसलिए दुनिया जहां एक जेब में जगह पा लेती है तब किसी के लिए तथ्यों को जानना मुश्किल नहीं रहता। आज इस्लामी राजनीतिक विचारधारा को किसी आलोचना से बचाने के लिए ओछी चतुराई का सहारा लेना बताता है सच बात मान लीजिये चेहरे पर धूल है, इल्जाम आइनों पर लगाना फिजूल है।

- राजीव चौधरी

घूरे के दिन बदलते हैं

100 की नोट 1000-500 की नोट को चिढ़ा रही थी,
घूड़े के दिन बदलते हैं यह बता रही थी।
राजनीति जैसा कभी-कभी ये अवसर आता है,
जैसे शासन सुख भोगी कभी दर-दर की ठोकर खाता है।
सबक जमाने को इससे सीखना चाहिए,
अपनी सीमाओं को न भूलना चाहिए।
क्योंकि उतार-चढ़ाव, उत्थान-पतन जिन्दगी का दस्तूर है,
जो चढ़ा है सूरज ऊपर, उसे ढ़लना जरूर है।
इसलिए हर हाल में एक रंग रखिये,
फिर सफर जिन्दगी का, खुशी से करिये।
ये सुख और दुःख, मान-सम्मान ऐसे ही घटते-बढ़ते हैं,
क्योंकि, घूड़े के दिन भी कभी बदलते हैं।

-प्रकाश आर्य, महू, मो. 9826655117

बोध कथा — आलस छोड़ो, श्रम करो!

दो अफ़ीमची अफ़ीम खाकर एक वृक्ष के नीचे लेटे थे। वृक्ष था बेरी का। शाखा से एक बेर एक अफ़ीमची की छाती पर आ गिरा, परन्तु वह अफ़ीमी ही क्या हुआ जो हाथ-पाँव हिलाये! रातभर बेर उसकी छाती पर पड़ा रहा। रातभर वह प्रतीक्षा करता रहा कि दूसरा अफ़ीमी उठे और बेर को उसके मुँह में डाल दे, परन्तु दूसरा भी तो अफ़ीमी था। वह भी रातभर लेटा रहा, उठा ही नहीं।

प्रातः एक व्यक्ति उधर से निकला। उसने ध्यान से उन दोनों को देखा। पहले समझा, शायद मर गए हैं। हिलते-जुलते नहीं। शायद रात में किसी सर्प ने अथवा विषैले कीड़े ने काट लिया है और दोनों के प्राणपखेरू उड़ गए हैं। परन्तु पास गया तो देखा कि दोनों की आँखें खुली हैं। दोनों बटर-बटर देख रहे हैं। आश्चर्य से उसने पूछा-''तुम्हें क्या हुआ है?''

वह बेर वाले के पास खड़ा था; बेरवाले ने धीमी आवाज़ में कहा-''यह बेर उठाकर मेरे मुँह में डाल दो।''

उस व्यक्ति ने बेर उठाया। उसके मुँह में डाल दिया; बोला-''यह बेर क्या अभी गिरा है?''

अफ़ीमी ने कहा-''नहीं भाई! रात से पड़ा है।''

उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा-''रात से पड़ा है? तुम्हारे दोनों हाथ विद्यमान हैं। तुमने इसे उठाया क्यों नहीं? बहुत आलसी प्रतीत होते हो तुम?''

पास लेटा हुआ दूसरा अफ़ीमी बोला-''इसकी सुस्ती की न पूछो बाबूजी! रातभर कुत्ता मेरा मुँह चाटता रहा और इससे यह भी न हो सका कि उसे परे हटा दे।'' उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा- ''तुम्हारे भी तो हाथ हैं?''

अफ़ीमी महोदय बोले-परन्तु मैं तो लेटा पड़ा था न! उठता कैसे?''

हत् तेरे की! मैं आपको निकम्मा और आलसी बनाना नहीं चाहता।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य समाज त्रिकुरा नगर जम्मू का 38वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज त्रिकुरा नगर (एक्सटेंशन सेक्टर-3) जम्मू का 38वां वार्षिकोत्सव एवं यज्ञ-प्रवचन बड़ी धूम-धाम के साथ दिनांक 11 से 13 नवम्बर के मध्य आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य विद्या भानु शास्त्री एवं सहयोगी श्री रणविजय शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। ध्वजारोहण डॉ. वेद कुमारी घई (संरक्षिका आर्य समाज त्रिकुटा नगर) के करकमलों द्वारा किया गया। देश विदेश में अपनी वाणी व संगीत से सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचारक श्री प्रकाश आर्य जी व सहयोगियों के सुन्दर भजनों व प्रवचन को उपस्थित जनों द्वारा श्रवण किया गया।

गुरु नानक और अकर्मण्यता का रोग

- डॉ. विवेक आर्य

गुरु नानक ने बाबर नामक राक्षस को भारत की प्रजा पर अकथनीय अत्याचार करते अपनी आँखों से देखा था। गुरु नानक ने इस अत्याचार से व्यथित होकर अपने मन की इच्छाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया था। यह रचनायें उस काल में देश तथा समाज की तत्कालीन समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता को प्रकट करती हैं। उस समय देश के शासक भोग-लिप्सा तथा मातृभूमि के प्रति अकर्मण्यता के भाव से पीड़ित थे। विदेशियों और विधर्मियों का प्रतिरोध करने के बजाय वे अपनी स्वार्थ पूर्ति और रंगरेलियों में लगे रहते थे। यह देखकर गुरू नानक ने उनको बड़े रोष पूर्वक फटकारा था।

गुरु नानक लिखते हैं-

राजा सिंह मुकद्दम कुत्ते-जाइ जगाई बैठे सुत्ते ।।
चाकर नहंदा पाईन्ह घाउ-रत पितु कुतिहां चटि जाहु।
जिथै जींआ होसी सार-नकी बड़ी लाइन बार।।

अर्थात्- ''वर्तमान समय के राजा शेर-चीतों की तरह हिंसक हैं और उनके अधिकारी कुत्तों की तरह लालची हैं और निर्दोष जनता को अकारण ही पीड़ित करते रहते हैं। राजकर्मचारी अपने नाखूनों से जनता को घायल करते रहते हैं और उसका खून कुत्तों की तरह ही चाट जाते हैं। परलोक में जब इनकी जाँच की जायेगी तो इनकी नाक काटी जायेगी।''

बाबर के सैनिकों ने चारों तरफ तबाही पैदा कर दी और लोगों के धन, मान तथा इज्जत को मिट्टी में मिला दिया। उस भयंकर काल में भारतीय नारियों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है-

जिन सिरि सोहनि पाटियाँ माँगी पाई संधूर ।।
से सिर काती मुनीअन्हि गल बिच आवे धूड़ि। ।।
महला अंदरि होदीआ हुणि वहणिन मिलन्ह हटूरि।।१
जदहु सीआ बिआहीआ लाड़े सोहनि पासि।
हीडोली चढ़ि आईआ दंद खंड दीदे रासि।
उपपहु पाणी बीरिऐ झले झपकनि पासि।।२
इक लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ी आ।
गरी छुहारे खाँदीआ माणन्हि से जडीआ ।।
तिन्ह गलि सिलका पाईया तुरीन्ह मोत सरी आ।।३
धनु जोवन दुइ वैरी होए जिन्हीं रखे रंगु लाइ ।।
दुता नो फुरमाइया लै चले पति गवाई। ।।

अर्थात्- ''जिन स्त्रियों के सिर में सुंदर पट्टियाँ शोभित होती थीं, जिनकी माँग में सिंदूर भरा हुआ था, अत्याचारियों ने उनके केश काट डाले और उन्हें भूमि पर इस तरह घसीटा कि गले तक धूल भर गई। जो महलों में निवास करती थीं, उनको अब बाहर बैठने को भी जगह नहीं मिलती। विवाहित स्त्रियाँ जो अपने पतियों के पास सुशोभित थीं, जो पालकियों में बैठकर आई थीं, जिन पर जल न्यौछावर करते थे, जड़ाबदार पंखों से हवा करते थे, जिन पर लाखों रुपये लुटाये जाते थे, जो मेवा-मिठाई खाती थीं, सेजों पर सुख भोगती थीं, अब अत्याचारी उनको गले में रस्सी डालकर खींच रहे हैं और उनके गले की मोतियों की मालाएँ टूट गई हैं अभी तक धन और यौवन ने उन्हें अपने रंग में रंग रखा था, अब वह दोनों उनके बैरी हो गये। सिपाहियों को आज्ञा मिली और वे उनकी इज्जत को लूटकर चले गए।'' अपने देश के संपन्न वर्ग की उस कठिन समय में कैसी दुर्गति हुई, उसकी एक झलक इस कविता में मिलती है।

जब मनुष्य इस प्रकार विवश हो जाता है और अत्याचार का कुछ प्रतिकार नहीं कर सकता तो वह भगवान् को उलाहना देने लगता है कि तुम कैसे न्यायकारी और करुणासिंधु हो जो संसार में ऐसा अंधेरखाता मचवा रहे हो। इस भाव से प्रेरित होकर नानक जी ने आदिग्रंथ में लिखा-

खुरासान खसमान कीआ हिंदुस्तानु डराइआ।
आपै दोसु न देई करता जमु का मुगल चढ़ाइआ।

.....बाबर के सैनिकों ने चारों तरफ तबाही पैदा कर दी और लोगों के धन, मान तथा इज्जत को मिट्टी में मिला दिया। उस भयंकर काल में भारतीय नारियों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है-
जिन सिरि सोहनि पाटियाँ माँगी पाई संधूर ।।
से सिर काती मुनीअन्हि गल बिच आवे धूड़ि। ।।....

एती मार पई कर लणे तैं की दरदु न आइआ।
करता तू समना का सोई।
जो सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई।
सकता सीहू मारे पै वर्ग खसमै सा पुरसाई। ।।

अर्थात्- ''हे भगवान् ! बाबर ने खुरासान को बर्बाद किया पर तुमने उसकी रक्षा न की और अब हिंदुस्तान को भी उसके आक्रमण से भयभीत कर दिया है। तुम स्वयं ही ऐसी घटनाएँ कराते हो, परंतु तुमको कोई दोष न दे इसलिए तुमने मुगलों को यमदूत बनाकर यहाँ भेज दिया। सर्वत्र इतनी अधिक मार-काट हो रही है कि लोग त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं। पर तुम्हारे मन में इन निरीह लोगों के प्रति तनिक भी दर्द पैदा नहीं होता। हे भगवान् ! तुम तो सभी प्राणियों के समान रूप से पालनकर्ता कहलाते हो, फिर यदि एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली सिंह, निरपराध पशुओं के झुंड पर आक्रमण करे तो उनके स्वामी को कुछ तो पुरुषार्थ दिखाना चाहिए।''

इस तरह परमात्मा को जोरदार उलाहना देकर नानक जी ने इस देश के प्रमुख शासकों तथा बड़े लोगों को भी फटकारा है कि तुमने अपने कर्त्तव्य को बिसरा दिया और भोग-विलास में डूब गए, उसी का नतीजा इस तरह भोग रहे हो-

रतन बिगाड़ बिगोए कुर्ती मुइआ सार न काई।
आगो देजे चेतीए तो काइतु मिलै सजाइ।

शाहां सुरति गबाईआ रगि तमासै चाइ।
बाबर वाणी फिरि गई कुइरा न रोटी खाई।
इकता बखत खुआई अहि इकंहा पूजा खाई।
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ।।
राम न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खदाई।

अर्थात्- ''इन नीच कुत्तों (विलासी शासकों) ने रतन के समान इस देश को बिगाड़कर रख दिया। इनके मरने के बाद कोई इनकी बात भी नहीं पूछेगा। अगर ये पहले से ही सावधान हो जाते तो हमको ऐसी सजा क्यों मिलती? पर यहाँ के शासक तो सदा रंग तमाशों में ही डूबे रहे, उन्हें अपने कर्त्तव्य का ध्यान ही न था। नतीजा यह हुआ कि इस समय चारों ओर बाबर की दुहाई फिर गई है, किसी को रोटी तक खाने को नहीं मिलती। मुसलमानों (पठानों) की नमाज का समय जाता रहा और हिंदुओं की पूजा छूट गई। अब चौके के बिना हिंदू स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी पवित्रता की रक्षा करेंगी? जिन्हें कभी राम शब्द भी याद नहीं आया था, अब वे आक्रमणकारियों के भय से खुदा को याद करना चाहते हैं, परन्तु जालिम लोग उनको खुदा भी नहीं कहने देते।''

खेद का विषय है कि इस प्रकार की जिल्लत उठाकर और अमानुषी दण्ड सहन करके भी हिंदुओं की आँखें नहीं खुलीं। उसके पश्चात् भी मानसिंह, जयसिंह, यशवंतसिंह आदि प्रमुख राजपूत नरेश मुगल बादशाहों के अनुचर बनकर अपने ही भाइयों को पराधीन बनाने का पाप-कर्म करते रहे। उसके बाद जब अंग्रेज आए तब भी हिंदुओं ने ही उनके सहायक बनकर शासन-कार्य में हर तरह से सहयोग दिया और आज के दिन भी इस जाति की पारस्परिक फूट, मत-विरोध, कर्त्तव्यहीनता स्पष्ट दिखाई पड़ रही है।

यह अकर्मण्यता, विलासिता, चिरनिंद्रा, जातिवाद का रोग आज भी वैसा का वैसा अपितु पहले से भी भयंकर बना हुआ है। पाकिस्तान, बांग्लादेश में हिंदुओं की हालात का तो विचार कब होता। अपने ही देश में कश्मीर, असम, बंगाल, केरल, कैराना उत्तर प्रदेश में हिन्दू चन्द वर्षों में अल्पसंख्यक हो गए मगर तब इनकी आंख नहीं खुली। जागो अब तो जागो। नानक के सन्देश को समझो और अपनी जाति, अपने वेद, अपने राम और कृष्ण की रक्षा करो।

काव्य अभिव्यक्ति

आर्य नेता-डॉ. धर्मवीर आर्य

जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।
वे कर जाते हैं अमर, अपना जग में नाम।।
अपना जग में नाम, धन्य है उनका जीवन।
उनके यश क गीत, नित्य गाते हैं सज्जन।।
धर्मवीर जी आर्य, वास्तव में थे नेता।
मानवता के पुंज, वेद विद्वान विजेता।।
उपदेशक धर्मात्मा, ईश्वर भक्त महान।
धीर-वीर निर्भीक थे, सच्चे थे इंसान।।
सच्चे थे इंसान, स्पष्टवादी थे नामी।
परोपकारी संत धैर्य के थे स्वामी।।
मिलनसार स्वभाव, सभी के मन भतिये।
मिलने वाले सभी, उन्हीं के बन जाते थे।।
वे प्यारे नेता गए, छोड़ सकल-संसार।
मौत बड़ा अचरज सुनो, आओ करें विचार।।
आओ करें विचार, प्रभु की लीला न्यारी।
पार नहीं पा सके, संत जन वेदाचारी।।
सृष्टि का है नेम, जगत में जो भी आते।
भोग, भोगकर सभी, जगत से वापस जाते।।
धर्मवीर जी ने किया, पावन वेद प्रचार।
देव पुरुष गुणवान की, जान गया संसार।।
जान गया संसार, तपस्वी मान रहा है।
देश भक्त बलवान, उन्हें जग जान रहा है।।
उनके अच्छे काम, न भूलेंगे नर-नारी।
सदा रखेगी याद, उन्हें यह दुनिया सारी।।
जागो प्यारे आर्यो! करो धम के काम।
धर्मवीर बनकर करो, जग में अपना नाम।।
जग में अपना नाम, वेद प्रचार करो तुम।
व्याकुल है संसार, जगत की पीर हरो तुम।।
द्वेश-ईर्ष्या तजो, साथियो! सदगुण धारो।
आए थे किस लिए जगत में बैठ विचारो।।

- पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार, बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

भारत में इस्लामिक बैंक : जरुरत किसकी?

अभी तक सबने धार्मिक आधार पर पूजा, उपासना के स्थान स्कूल, कॉलेज, और आरक्षण में बंटवारा होता देखा होगा। लेकिन भारत में अब पहला धार्मिक आधार पर बैंक भी शुरु होने जा रहा है। मतलब मुस्लिमों के लिए अलग बैंक। इसकी पहली शुरुआत गुजरात से होगी । जहां देश का पहला जेद्दाह का इस्लामिक डेवेलपमेंट बैंक (आईडीबी) अपनी पहली शाखा खोलने जा रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक ने सरकार के साथ मिलकर ब्याज मुक्त बैंकिंग शुरू करने का प्रस्ताव दिया है। इस बैंकिंग की शुरूआत करने का प्रस्ताव इसलिए लाया गया है ताकि धार्मिक कारणों से बैंकिंग सिस्टम से दूर रहने वाले लोगों खासकर मुस्लिमों को भी इसका हिस्सा बनाया जा सके। क्योंकि मौजूदा भारतीय बैंकों के अन्दर सभी सिस्टम ब्याज आधारित हैं। बता दें कि इस्लाम में ब्याज आधारित बैंकिंग प्रतिबंधित है। इस तरह की बैंकिंग को इस्लामिक फाइनेंस या इस्लामिक बैंकिंग भी कहा जाता है। अपने सालाना रिपोर्ट में आरबीआई ने पिछले दिनों यह प्रस्ताव बनाया है। दरअसल दूसरे विश्व युद्ध के बाद पूरे विश्व के देशों का भूगोल बदला था। इसके बाद इस्लामिक देशों को लगा कि इस्लाम का प्रचार-प्रसार अब तलवार के जोर पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए नये और उदारवादी रास्ते तलाश करने होंगे। जिसके बाद 1969 में रबात में हुए इस्लामिक देशों के प्रमुखों के सम्मेलन में यह निर्णय किया गया था कि विश्व में इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए बैंकिंग व्यवस्था का भी इस्तेमाल किया जाए ताकि गरीब और कमजोर लोगों को बिना ब्याज के पैसा देकर इस्लाम की मान्यताओं की तरफ आकर्षित कर उनका धर्मान्तरण किया जा सके। 1981 में पाकिस्तानी बैंकिंग विशेषज्ञ मौलाना अब्दुल रहमान कैनानी ने कराची के डॉन समाचार पत्र में अपने एक आलेख के जरिये इस तरफ फिर मुस्लिम देशों का ध्यान खींचा जिसके बाद जेद्दाह में पहला इस्लामिक विकास बैंक स्थापित किया गया था। इस समय इस्लामिक बैंक की विश्व के 56 इस्लामी देशों में शाखाएं हैं। भारत एक मात्र गैर- मुस्लिम देश होगा जिसमें इस्लामिक बैंकिग व्यवस्था शुरु की जा रही है।

इकोनॉमिक टाइम्स के मुताबिक कुछ इस्लामिक देशों के पास भरपूर पैसा है। अगर मोदी सरकार इंटरेस्ट फ्री बैंकिंग शुरू कर दे तो यह पैसा भारत में आ सकता है। लेकिन इसमें बड़ी खास बात यह है कि यह बैंक भारत के सविंधान के अनुरूप चलने के बजाय शरियत कानून के अनुसार चलेगा? लेकिन इसमें सवाल यह हैं कि क्या मुस्लिम देशों में बैंक बिना ब्याज दरों के काम करते हैं तो इस बात की गारंटी कौन देगा कि भारत के अन्दर मुस्लिम इस बैंक का इस्तेमाल बिना ब्याज दरों के करेंगे? यदि बैंक शरियत के अनुसार ब्याज का लेन-देन नहीं करता तो बैंक कर्मचारियों का वेतन या बैंक की कमाई के स्रोत क्या हैं? इसके बाद यदि कोई इसके अन्दर ब्याज दरों के द्वारा लेन-देन करता है तो शरियत के अनुसार उनकी सजा क्या है? यह भी सार्वजनिक होना चाहिए। हमें नहीं पता आखिर इस फैसले के पीछे सरकार का उद्देश्य क्या है! पर इतना जानते है बाबर 1500 सौ सैनिकों को लेकर भारत आया था और फिर पीढ़ियों तक राज किया। इसके बाद ईस्ट इंडिया नाम की एक छोटी सी कम्पनी भारत आई, जिसने अपना एक तंबू कलकत्ता में गाड़ा था, जिसके बाद 250 सौ साल राज किया था। न हमारा अतीत ज्यादा पुराना है न हमारे घाव और न ही हमारी स्वतन्त्रता। अभी कुछ ही समय बीता है उस काले अध्याय से छुटकारा मिले। क्योंकि इस्लामिक देशों का पैसा अगर इस तरह से देश में आएगा तो इससे आतंकवादियों को बड़ी मदद भी मिल सकती है। कहा जा रहा है कि इस सौदे को करवाने में प्रधानमंत्री के एक करीबी मुस्लिम नेता जफर सरेशवाला की विशेष भूमिका है। जफर सरेशवाला ने इस समझौते की पुष्टि की और कहा कि इस्लामी बैंक की पहली शाखा अहमदाबाद में खोली जाएगी। यह बैंक मुस्लिम वक्फ संपत्तियों के विकास पर भी भारी धनराशि खर्च करेगा जिससे भारतीय मुसलमानों को भारी लाभ होगा। गौरतलब है कि इस्लामिक विकास बैंक सउदी अरब का सरकारी बैंक है। इससे जो लाभ प्राप्त होता है उसका इस्तेमाल इस्लाम के प्रचार प्रसार और धर्मान्तरण के लिए किया जाता है। दस वर्ष पूर्व इस्लामिक विकास बैंक के निदेशक मंडल की एक बैठक दुबई में हुई थी जिसमें यह मत व्यक्त किया गया था कि विश्व में भारत ऐसा देश है जिसमें गैर-मुसलमानों की संख्या सबसे अधिक है। इसलिए भारत में इस्लाम के प्रचार-प्रसार और धर्मान्तरण की सबसे ज्यादा संभावनाएं हैं। इस बैंक ने देश में इस्लाम के प्रचार के लिए एक कार्यक्रम भी बनाया था पर तब तत्कालीन सरकार ने मना कर दिया था किन्तु आज मौजूदा भारत सरकार ने देश में इस्लामिक बैंकिंग व्यवस्था शुरु करने के लिए हरी झंडी दे दी है।

अब प्रश्न यह कि क्या इस बैंक के दरवाजे गैर-मुसलमानों के लिए भी खुले होंगे, या उनसे गैर-मुसलमान भी ब्याज रहित ऋण प्राप्त कर सकेंगे? यदि नहीं! तो क्या इस ऋण का इस्तेमाल गैर-मुलसमानों के इस्लाम कबूल करने के लिए प्रलोभन के रूप में तो नहीं किया जाएगा? क्या इस्लामी बैंकों की शाखाओं का इस्तेमाल आतंकवादियों को फंड उपलब्ध कराने के लिए तो नहीं होगा? ऐसा नहीं है कि भारत सरकार ने मुस्लिमों को खुश करने या उनके सामाजिक उद्धार के लिए कोई कार्य नहीं किया! राजीव गांधी सरकार ने मुस्लिमों के आर्थिक उत्थान के लिए एक कार्यक्रम शुरु किया था। उसके तहत राष्ट्रीयकृत बैंकों के निदेशक मंडलों को यह निर्देश दिया गया था कि वह ऋण देते समय मुस्लिम समुदाय का विशेष ध्यान रखें। बैंकों द्वारा जो ऋण वितरित किया जाता है उसका कम से कम 15 प्रतिशत मुसलमानों को दिया जाना चाहिए। इसी नीति पर मोदी सरकार भी चल रही है। अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री डा. नजमा हेपतुल्ला ने राष्ट्रीयकृत बैंकों को यह निर्देश दिया है कि मुसलमानों को स्वरोजगार शुरु करने के लिए ज्यादा से ज्यादा कर्ज दिया जाए वह भी बहुत कम ब्याज पर। सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि जो संघ परिवार पिछली सरकार के समय देश में इस्लामी बैंकिग व्यवस्था को शुरु करने का जबरदस्त विरोध कर रहा था अब उसने देश में इस्लामी बैंक की शाखाएं खोलने के बारे में अपनी जुबान क्यों बंद कर रखी है? क्या अब संघ परिवार के लिए राष्ट्रहित की बजाय राजनीतिक हित सर्वोपरि हो गया है? जबकि भारत में इस्लामिक बैंक संविधान विरोधी और आतंकवाद समर्थित हो सकता है।

.....प्रश्न यह है कि क्या इस बैंक के दरवाजे गैर-मुसलमानों के लिए भी खुले होंगे, या उनसे गैर-मुसलमान भी ब्याज रहित ऋण प्राप्त कर सकेंगे? यदि नहीं! तो क्या इस ऋण का इस्तेमाल गैर- मुलसमानों के इस्लाम कबूल करने के लिए प्रलोभन के रुप में तो नहीं किया जाएगा? क्या इस्लामी बैंकों की शाखाओं का इस्तेमाल आतंकवादियों को फंड उपलब्ध कराने के लिए तो नहीं होगा? ऐसा नहीं है कि भारत सरकार ने मुस्लिमों को खुश करने या उनके सामाजिक उद्धार के लिए कोई कार्य नहीं किया!.... ... सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि जो संघ परिवार पिछली सरकार के समय देश में इस्लामी बैंकिग व्यवस्था को शुरु करने का जबरदस्त विरोध कर रहा था अब उसने देश में इस्लामी बैंक की शाखाएं खोलने के बारे में अपनी जुबान क्यों बंद कर रखी है? क्या अब संघ परिवार के लिए राष्ट्रहित की बजाय राजनीतिक हित सर्वोपरि हो गया है? जबकि भारत में इस्लामिक बैंक संविधान विरोधी और आतंकवाद समर्थित हो सकता है।

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

मोबाइल ट्यन - रिंग टोन/कॉलर ट्यून को कई बार हम व्यक्ति विशेष की पहचान के लिए प्रयोग करते हैं। वहां हमारी कॉलर टयून/रिंग टोन ही हमारी पहचान होती है। तो आइए हम मिलकर अपने आपको महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज को समर्पित करें और अपने मोबाईल में ऐसी ट्यून सैट करें कि आस-पास खड़ा कोई भी व्यक्ति हमें जान जाए कि हम आर्यसमाज के सदस्य हैं, महर्षि दयान्द सरस्वती जी के मानस पुत्र हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों को कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की ट्यन बनवाई गई है जोकि अनेक मोबाइल कम्पनियों द्वारा स्वीकार की गई हैं। आइए हम अपने पसन्दीदा गीत को अपनी पहचान बनाएं। नीचे दिए गए गीतों में से किसी भी गीत को अपनी ट्यून बनाने के लिए अपनी मोबाईल कम्पनी के निर्देशानुसार डायल/एस.एम.एस. करें। गीतों के चयन के लिए सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर लॉगऑन करें अथवा http://www.binacatunes.com/Home/Search_?keyword=dev+dayanand पर क्लिक करें। उपलब्ध गीत इस प्रकार हैं-

अब रस्ता कर दो खाली, आई फौज दयानन्द वाली.....

हे प्रभु हम तुझसे वर पावें, सकल विश्व को आर्य बनावें.....

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं .....

हमको सब दुनिया जाने, हैं वीर दयानन्द के.....

जो होली सो होली, भुला दो उसे आज मिलने मिलाने.....

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए .....

सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों, सुनो बात अनमोली.....

यूं तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में, नहीं गुरुदेव दयानन्द सा....

Glimpses of the Sama Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Prudent Saint

The saint has divine vision. His heart keeps on flashing day and night with the message of the Lord. Thoughts for the welfare of others are always reflected in his eyes and voice. The saint is a universal person, a charioteer of the world chariot. The common man like us is the horse of the universal chariot. There exists a magnetic power between the charioteer and the horse. One treats the other as one's own. The horses begin to run as soon as the charioteer takes his seat on the chariot. They get fresh vigour and are ready to shed their lives for the safety of their master. The charioteer also takes their care sharing in their joy and sorrow.

The saint is a prudent speaker whose audience listen to him with rapt attention. They are spell-bound to hear him. His look drives away the evil that sets in the mind of the visitor. The saint becomes one with the Universal Soul. His chariot moves along with the chariot of the creation. He proceeds with the divine speed without exertion. But to reach the state of sainthood, a person is required to possess absolute self-culture and supreme sacrifice.

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रिय कवीनां मतिः।
सृजदश्वं रथीरिव।। (Sv.481)

Induh pavista cetanah priyah kavinam matih.
srjad asvam rathirva..

The Poet

In Vedic Texts the compose of an ordinary poem is not considered as a poet. the true poet is he whose thinking expands across the universe without being limited to smaller things. Moving like clouds he roams around the world. He envisages the beautiful God in every object of beauty. His thought-process is never confined to individuals and lands. He is free as a bird. He keeps on drifting at will sitting on the waves of the ocean. The ocean is the ecpanse of the heart. He is always eager to convert a human body into a universal person. No narrow thought ever touches his mind. He has no worry for earning his livelihood. Food comes to him naturally. Riding on the crest of the wave of love, he travels far and wide ever seated in one spot.

The poet is wealthy in his own way with the wealth of his own self. When he distributes the wealth, it increases by the same amount as it gets distributed. Such poets receive the divine words of the Lord at the advent of each step of creation. They hand over the revealed knowledge to others, assign names to surrounding objects and establish the norms of human conduct.

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः।
कारुं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्।। (Sv.486)

Pari prasisyadat kavih sindhorurmavadhi sritah.
karum bibhrat purusprham..

The First and the Last Verses of the Sama Veda

'Come, O adorable Lord, to bless the dedicated devotee with joy and prosperity. We invoke you earnestly to accept our loving devotions. May you be seated in the innermost chamber of our heart, O liberal Giver.'

'May the widely respected, the resplendent God, guard our welfare. May the all-knowing Nourisher guard our welfare. May the Creator of the cyclic Universe ceaselessly guard our welfare. May the sovereign Protector, with unblemished weapons guard us for our prosperity.'

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।। (Sv.1)

Agna a yahi vitaye grnano havyadataya.
ni hota satsi barhist..

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। (Sv.1874)

Svasti na indro vrddhasravah svasti nah pusa visva vedah.
svasti nas tarksyo arista nemih svasti no brhaspatir dadhatu svasti no brhaspatir dadhatu. ***The End***

आर्यसमाज नफगढ़ नई दिल्ली में

उपनिषद् प्रवचन माला

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली द्वारा आर्यसमाज नजफगढ़ नई दिल्ली में 28 से 30 नवम्बर, 2016 तक सायं 7:30 से 9 बजे तक माण्डूक्य उपनिषद् पर प्रवचनों का आयोजन किया जा रहा है। प्रवक्ता आचार्य इन्द्रदेव जी होंगे। – ***मन्त्री***

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 16

दैनिक व्यवहारोपयोगी संस्कृत वाक्य व उक्तियाँ

गतांक से आगे....

अजीर्णे भोजनं विषम्	–	अपाचन हुआ हो तब भोजन विष समान है।
कुभोज्येन दिनं नष्टम्	–	बुरे भोजन से पूरा दिन बिगडता है ।
मनः शीघ्रतरं वातात्	–	मन वायु से भी अधिक गतिशील है ।
न मातुः परदैवतम्	–	माँ से बढ़कर कोई देव नहीं है ।
गुरुणामेव सर्वेषां माता गुरुतरा स्मृता	–	सब गुरु में माता को सर्वश्रेष्ठ गुरु माना गया है ।
वस्त्रेण किं स्यादिति नैव वाच्यम् वस्त्रं सभायामुपकारहेतुः।	–	अच्छे या बुरे वस्त्र से क्या फर्क पड़ता है ऐसा न बोलो, क्योंकि सभा में तो वस्त्र बहुत उपयोगी होता है !
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्	–	जो धर्म की बात नहीं करते वे वृद्ध नहीं हैं।
अन्तो नास्ति पिपासयाः	–	तृष्णा का अन्त नहीं है ।
मृजया रक्ष्यते रूपम्	–	स्वच्छता से रूप की रक्षा होती है।
भिन्नरूचिर्हि लोकः	–	मानव अलग अलग रुचि के होते हैं ।
तृणाल्लघुतरं तूलं तूलादपि च याचकः	–	तिन्के से रुई हलका है, और याचक रुई से भी हलका है ।
मौनं सर्वार्थसाधनम्	–	मौन यह सर्व कार्य का साधक है।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्	–	शास्त्र सबकी आँख है ।
षटकर्णो भिद्यते मन्त्रः	–	मंत्र षटकर्णी हो तो उसका नाश होता है ।
बालादपि सुभाषितम् ग्राह्यम्	–	बालक के पास से भी अच्छी बात (सुभाषित) ग्रहण करनी चाहिए ।
साक्षरा विपरीतश्चेत् राक्षसा एव केवलम्	–	साक्षर अगर विपरीत बने तो राक्षस बनता है
कुलं शीलेन रक्ष्यते	–	शील से कुल की रक्षा होती है।
शीलं भूषयते कुलम्	–	शील कुल को विभूषित करता है।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः	–	अप्रिय हितकर वचन बोलने वाला और सुनने वाला दुर्लभ है । – ***क्रमशः***

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

झट क्षमा मांग ली

ब दयानन्द मठ की स्थापना का विचार आपके मन में आया तो आपने आर्य-पत्रों में अपनी योजना रक्खी। इसपर अनेक आर्य नेता वा विद्वानों ने जहाँ आपके विचार का समर्थन किया, वहाँ कुछ एक ने विरोध में भी लेख दिये। ऐसे लोगों में एक थे स्वर्गीय श्री पण्डित भीमसेनजी विद्यालंकार। आप तब पंजाब सभा के मन्त्री थे। सभा के पत्र में आपका एक लेख दयानन्द मठ के विषय पर छपा।

स्वामीजी तब सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान थे। आपने पण्डित भीमसेनजी के लेख का उत्तर देते हुए एक लेख में लिखा- सभा मन्त्रीजी ऐसा लिखते हैं आदि आदि। इसपर पण्डित भीमसेनजी का लेख छपा कि ये मेरे निजी विचार थे। मैंने सभामन्त्री के रूप में ऐसा नहीं लिखा। क्या स्वामीजी के लेख को मैं सार्वदेशिक के कार्यकर्त्ता प्रधान का लेख जानूँ? पण्डितजी ने स्वामीजी के लेख पर इस आधार पर बड़ी आपत्ति की।

श्री स्वामीजी ने इसपर एक और लेख दिया। उसमें आपने लिखा कि चूँकि लेख सम्पादकीय के पृष्ठ पर छपा था- जिस पृष्ठ पर सभामन्त्री के नाते वे यदा-कदा लिखा करते थे, अतः मैंने इस सभामन्त्री का लेख जाना। मेरा जो भी लेख सार्वदेशिक के अधिकारी के रूप में होगा, उसके नीचे मैं कार्यकर्त्ता प्रधान लिखूँगा।

मैंने पण्डितजी के लेख को सभामन्त्री का लेख समझा, यह मेरी भूल थी। इसलिए मैं पण्डितजी से क्षमा माँगता हूँ। कितने विशाल हृदय के थे हमारे महापुरुष। उनके बड़प्पन का परिचय उनके पद न थे अपितु उनका व्यवहार था। वे पदों के कारण ऊँचे नहीं उठे, उनके कारण उनके पदों की शोभा थी।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 13 नवम्बर 2016 को चौधरी छोटूराम धर्मशाला रोहतक के भवन में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल शिखापुरम् की प्राध्यापिका उर्मिला आर्य के ब्रह्मत्व तथा प्रवेश आर्या के संयोजकत्त्व में आरम्भ हुआ। स्वामी परमचैतन्य महाराज संस्थापक एवं अध्यक्ष जन सेवा संस्थान (रोहतक) तथा आचार्य धनञ्जय (गुरुकुल पौंधा, देहरादून) का उद्बोधन उत्साहवर्धक रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री आजाद सिंह लाकड़ा ने अपने वक्तव्य में नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान की इस छात्रवृत्ति योजना को अत्युत्तम एवं सराहनीय बताया। – ***रामपाल शास्त्री***

आर्य समाज जहांगीरपुरी का 38वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर जहाँगीरपुरी का 38वां वार्षिकोत्सव 27 नवम्बर 2016 प्रातः 8.30 बजे से 2 बजे दोपहर के मध्य आई ब्लाक रामलीला पार्क हरित पट्टी जहाँगीरपुरी में आयोजित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत 11 कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि स्वामी देवव्रतजी, प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री जगवीर जी आर्य प्रधान आर्य वीरदल होंगे। *- रामभरोसे साह, मन्त्री*

खेड़ा अफगान, सहारनपुर में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्द्धिनी प्रतियोगिता

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास और आर्य समाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर के तत्त्वावधान में बच्चों की वैदिक संस्कृति ज्ञान बर्द्धिनी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य विद्याभानु शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में बच्चों का ज्ञानवर्धन किया। मुख्य अतिथि नकुड क्षेत्र के विधायक एवं पूर्व शिक्षा कैबिनेट मंत्री श्री धर्मसिंह सैनी ने कहा कि 'युवाओं का नैतिक पतन रोकने के लिए आवश्यक है कि युवाओं का उचित मार्ग दर्शन हो यह मार्ग दर्शन आर्य समाज के अतिरिक्त कहीं भी सम्भव नहीं है।' कार्यक्रम के अन्त में संचालक न्यास सचिव वेद भूषण गुप्त व आर्य समाज के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्त ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया। *- अमित कुमार आर्य, मंत्री*

निर्वाणोत्सव पर पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सै.-14 फरीदाबाद (हरियाणा) के त त्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 133वें निर्वाणोत्सव पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में लगभग 30 बच्चों ने भाग लिया जिन्होंने ऋषि दयानन्द जी की विविध मुद्राओं में सुन्दर-सुन्दर पोस्टर बनाए। कार्यक्रम श्री सुरेन्द्र सिंह चौधरी प्राचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने ऋषिवर के जीवन पर आधारित घटनाओं का उल्लेख कर बच्चों को प्रेरणा दी। *-हरि ओम शास्त्री, मंत्री*

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग का 27वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग नई दिल्ली का 27वाँ वार्षिकोत्सव 24 से 27 नवम्बर 2016 तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर यज्ञ, सम्मेलन व आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। *- रवि चड्ढा, मंत्री*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। *- सम्पादक*

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर का 83वां वार्षिकोत्सव

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119 गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली-49 का 83वां वार्षिकोत्सव एवं 37वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 27 नवम्बर से 18 दिसम्बर 2016 तक पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न हो रहा है। चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित डॉ. महावीर (पूर्व कुलपति उ.स.वि.वि. हरिद्वार) होंगे। महायज्ञ में आर्यजगत के उच्चकोटि के साधु-सन्यासी, विद्वान्-मनीषि तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। **-स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015

प्रधान	:	श्री राजेन्द्र पाल आर्य
मन्त्री	:	श्री सतीश चड्ढा
कोषाध्यक्ष	:	श्री सुरेश तेजी

स्त्री आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015

प्रधान	:	श्रीमती कविता आर्या
मन्त्री	:	श्रीमती सुषमा सेठ
कोषाध्यक्ष	:	श्रीमती वीना ऑबराय

शोक समाचार

श्री रामलाल मोघा का निधन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य जी के श्वसुर श्री रामलाल मोघा जी का 15नवम्बर, 2016 को निधन हो गया। वे अपने पीछे चार पुत्र एवं दो सुपुत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गए हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 28 नवम्बर को दोपहर 2 बजे गांव तेड़ा, बागपत (उ.प्र.) स्थित उनके आवास पर सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

17वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 15 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए, जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता हैं तथा **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भरकर पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **(मो. 9414187428)**

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **(मो. 9540040324)**

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :.................... गोत्र....................
2 जन्मतिथिः.................... स्थान : ....
3. रंग.................... वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता ....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसायः .... मासिक आय....................
7. पूरा पताः....................

दूरभाष :.................... मोबा.:.................... ईमेल :....................

8. मकान निजी/किराये का है....................
9. माता का नाम :.................... शिक्षा :.................... व्यवसाय : ....
10. भाई - अविवाहित....................विवाहित.................... । बहिन- अविवाहित....................विवाहित.................... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? ....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : विधवा : तलाकशुदा : विकलांग :
14. विशेषः किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: ....

दिनांक : .... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नई दिल्ली 15 जनवरी 2017

परिचय सम्मेलन 15 जनवरी 2017, रविवार, आर्य समाज, अशोक विहार, फेज 1,F-5 नई दिल्ली-110052 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्डा (09414187428) अथवा दिल्ली के संयोजक श्री एस. पी. सिंह (09540040324) श्री प्रेम सचदेवा, प्रधान आर्य समाज अशोक विहार (09811122320), श्री जीवन लाल आर्य - मंत्री- अशोक विहार (09718965775) से सम्पर्क करें।

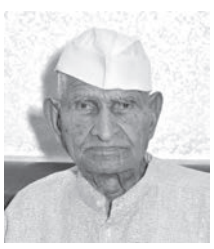

नोट :1. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
3. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।** यहफार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक matrimony.thearyasamaj.org
4. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रू. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट प्रति सम्मेलन के हिसाब से संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
5. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लेकर लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 21 नवम्बर, 2016 से रविवार 27 नवम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24/25 नवम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 नवम्बर 2016

सामयिक चर्चा

छोटी सी असुविधा - फिर लाभ ही लाभ !

यत्तदग्रे विषमिव परिणामे अमृतोऽपमम्।।

- प्रकाश आर्य

अ र्थात् प्रारम्भ में कुछ बातें विष के समान लगती हैं किन्तु बाद में वे अमृत तुल्य होती है।

मोदी सरकार ने 1000-500 के नोटों पर राष्ट्र की स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रतिबन्ध लगा दिया। किन्तु इस घोषणा के विरुद्ध जिसे हम हमारी राजनैतिक मजबूरियां कहें, स्वार्थ कहें या मोदी सरकार का विरोध करना, परम नैतिक कर्त्तव्य मानकर इसका विरोध किया जा रहा है।

असल में एक कहावत है *'बैठा बाणिया क्या करे, इधर का सामान उधर धरे।'* कुछ काम नहीं तो अपने होने का एहसास समाज को दिलाने के लिए कुछ तो करना होगा। अन्यथा कुछ चिल्ल पुकार नहीं करेंगे, जनता के रहनुमा बनने का ढ़ोंग नहीं करेंगे, घड़ियाली आंसू नहीं बहायेंगे तो समाज से अस्तित्त्व की पहचान ही खो जाने का भय है।

हंसी और आश्चर्य तो तब होता है जब वे लोग जिनके पास समय था, सत्ता थी उन्होंने वर्षों में कुछ नहीं किया वे कुछ दिन की सरकार से हिसाब मांगते हैं। कौओं ने एक सफेद कबूतर पर लगे कुछ काले छींटों को देखकर उसका मजाक उड़ाया, कबूतर ने उत्तर देकर कहा भाई तू मेरे कुछ काले छींटों को देखकर हंसी उड़ा रहा है जरा अपनी ओर तो देख तू तो पूरा ही काला है। वही स्थिति कौओ के रूप में काले अन्य राजनैतिक दलों की है।

इन नोटों के बन्द होने की विशेष चिन्ता गरीब या मध्यम वर्ग को नहीं है। हाँ, कुछ परेशानी जो अस्थायी है, रुपयों की प्राप्ति की उससे कुछ परेशानी बढ़ी है। वास्तव में इन 1000-500 के नोट बन्द होने का उनको सन्ताप सता रहा है जिन्होंने 2 नम्बर, 4 नम्बर से संजोकर 1000-500 के बड़ी संख्या में रुपए रख रखे थे। फिर भी ये नोट बन्द करने के पूर्व कई माह तक काला धन जमा कराकर सरकार से विशेष छूट की सूचना दी जा रही थी। आज इस घोषणा से कितना लाभ देश को हुआ, इसका विश्लेषण विरोधी नहीं करते। इन नोटों से देश की बर्बादी, आतंकवाद, नक्सली और नकली नोटों की बाहर से बड़ी तादाद में आने से हो रही थी।

नक्सलवादी, आज अपंग से हो रहे हैं, कश्मीर में पत्थर फेंकना बन्द हो गया (1000-500) की नोट पर मजदूरी से फेंके जाते थे, नकली नोटों के चलन से देश की अर्थ व्यवस्था को होने वाली बहुत बड़ी क्षति से राहत मिली। अरबों रुपया बैंकों में जो छिपा हुआ था जमा हुआ। इन सब राष्ट्रहित कार्यों की ओर कोई बहस विपक्षी नहीं करते। क्योंकि उनका जन्मसिद्ध अधिकार है उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी कार्य, कितना भी अच्छा कार्य चाहे बाबा रामदेव हो, चाहे अन्ना हजारे हों, फिर चाहे एक निष्ठावान ईमानदार राष्ट्र समर्पित भावना वाला प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ही क्यों न हो, हम तो वही करेंगे जो हमारे स्वार्थ से लबालब भरा हो, आज का राजनैतिक चरित्र कहता है।

बिच्छू का स्वभाव है सहयोग करने वाले को भी डंक मारना। सांप को दूध अमृत तुल्य दूध पिला दो, पर विष ही बनता है। राष्ट्र नीति नहीं दलगत राजनीति के कारण विरोध का स्वभाव अब संस्कार में परिवर्तित हो गया है।

सामान्य जीवन में किसी भी कार्य के पूर्व कुछ असुविधाएं होती हैं, कुछ कठिनाईयां या विरोध भी सामने आता है। परिवार में नए बालक के आने की प्रसन्नता और लाभ कौन नहीं मानता, परन्तु बालक के जन्म के पूर्व प्रसूता के कष्टों से भी कोई मना नहीं कर सकता, किन्तु सभी जानते हैं स्वयं प्रसूता असहनीय दर्द

को सहन करने में डरती नहीं, क्योंकि वह जानती है कुछ समय पश्चात अच्छे दिन आने वाले हैं। उन अच्छे दिनों का संबल कष्टों को सहन करने की हिम्मत देता है।

बीमार होने पर बच्चा कड़वी दवाई और इंजेक्शन के भय से डरता है, चिल्लाता है इसलिए क्योंकि वह नहीं जानता यही उसकी बीमारी को यही थोड़ा कष्ट दूर करेगा। किन्तु समझ आने पर स्वयं जाकर उस कड़वी दवा इंजेक्शन यहां तक कि ऑप्रेशन की पीड़ा को भी सहन करते हैं क्योंकि वह जानता है कि इस पीड़ा का परिणाम अच्छा होने वाला है।

इसी प्रकार किसी बड़े सुधार या राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए होने वाली कुछ समस्याओं को सहन करके उससे विचलित नहीं होना चाहिए। आजकी यही सहनशीलता राष्ट्र का संबल बनेगी। स्वार्थवश राई सी समस्या को पहाड़ बनाने वालों का इस देश से नहीं कुर्सी से प्रेम है। इसलिए इनके बहकावे में आकर धैर्य नहीं छोड़े अपितु धैर्यता के साथ वर्तमान परिस्थिति में रहकर सहनशील बनें और राष्ट्रहित में सहयोगी बनें।

ये समय है,
समय का प्रवाह रुकता नहीं,
ये सभी बदल जाएंगे।
आज,
बढ़ चढ़कर विरोध करने वालों के,
देख लेना, कल चेहरे उतर जायेगें।।

- मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

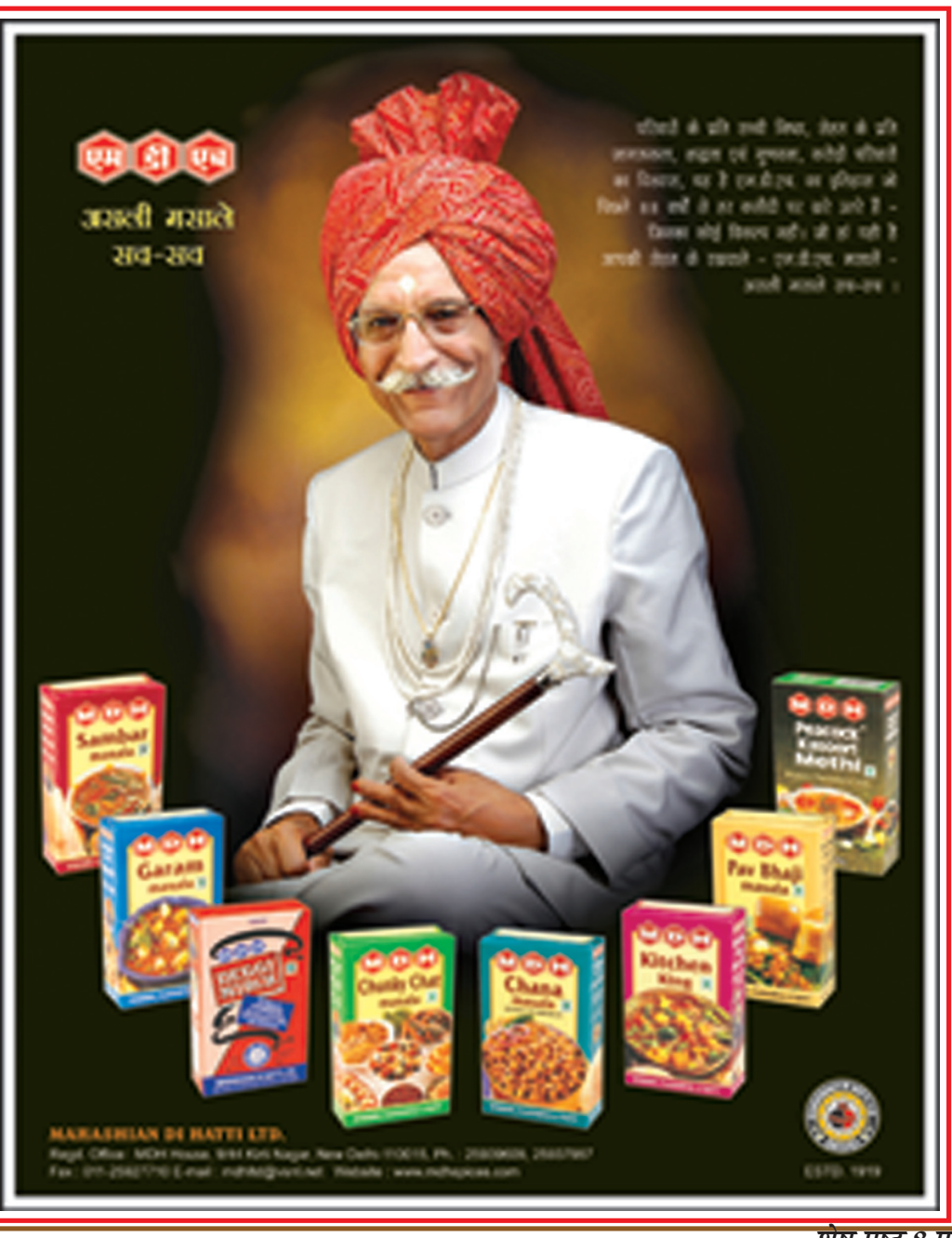

- शेष पृष्ठ 8 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह